Remaking One Health Indies

भारत में सामुदायिक कुत्ते एवं बहु-प्रजातीय स्वास्थ्य

संघर्ष की रोकथाम एवं सुरक्षित सह-अस्तित्व हेतु दिशानिर्देश

प्रस्तावना

इन दिशानिर्देशों में सामुदायिक कुत्ते और मनुष्यों के बीच होने वाले संघर्ष की रोकथाम तथा उसके प्रभावी समाधान के लिए व्यावहारिक उपाय एवं प्रासंगिक पृष्ठभूमि संबंधी जानकारी प्रदान की गई है। इन्हें व्यक्तियों, समुदायों, सामुदायिक कुत्तों की देखभाल करने वाले लोगों (Caregivers) तथा नीति-निर्माताओं (Policymakers) के लिए इस उद्देश्य से विकसित किया गया है कि मनुष्यों और सामुदायिक कुत्तों के बीच सुरक्षित एवं स्वस्थ सह-अस्तित्व (Safe and Healthy Cohabitation) को बढ़ावा दिया जा सके।
इन दिशानिर्देशों में वर्णित रणनीतियाँ एवं सिद्धांत ROH Indies Project द्वारा भारत में किए गए दीर्घकालिक क्षेत्रीय अनुसंधान (Long-term Field Research) पर आधारित हैं। इस अनुसंधान में मानव भूगोल (Human Geography), व्यवहारिक पारिस्थितिकी (Behavioural Ecology), सामाजिक मनोविज्ञान (Social Psychology) तथा इतिहास (History) जैसे विषयों का समन्वित उपयोग करके ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में मनुष्यों और सामुदायिक कुत्तों के बीच होने वाली अंतःक्रियाओं (Interactions) का अध्ययन किया गया।

इस अध्ययन में निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्मिलित थीं—

- आम नागरिकों का सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार।
- सामुदायिक कुत्तों की देखभाल करने वाले व्यक्तियों एवं पशु कल्याण कार्यकर्ताओं से चर्चा।
- रेबीज़ (Rabies) की रोकथाम एवं प्रबंधन से जुड़े विशेषज्ञों का अध्ययन।
- क्षेत्र स्तर पर सामाजिक एवं पारिस्थितिक अवलोकन (Socio-Ecological Observations)।
- अभिलेखीय (Archival), विधिक (Legal) तथा मीडिया अनुसंधान।

इन विभिन्न दृष्टिकोणों ने परियोजना को भारत में सामुदायिक कुत्तों से संबंधित सामाजिक, पारिस्थितिक तथा कानूनी परिस्थितियों में समय के साथ आए परिवर्तनों को समझने एवं उनका विश्लेषण करने में सक्षम बनाया।

विशेष रूप से, ये दिशानिर्देश निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्षों पर आधारित हैं—

(क) मनुष्यों और सामुदायिक कुत्तों के बीच दैनिक स्तर पर होने वाली अंतःक्रियाओं की प्रकृति।

(ख) मनुष्य– सामुदायिक कुत्तों संघर्ष के प्रमुख कारण।
हमारे अनुसंधान से यह स्पष्ट हुआ है कि सामुदायिक कुत्तों की देखभाल (Caregiving Practices) के तरीकों में आए परिवर्तनों ने मनुष्य– सामुदायिक कुत्तों संबंधों की विविधता तथा उन सामाजिक एवं पारिस्थितिक परिस्थितियों को प्रभावित किया है, जिनके कारण दोनों के बीच लंबे समय तक शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व संभव हो पाता था।
इसके परिणामस्वरूप सामुदायिक कुत्तेसे संबंधित मुद्दों पर जमीनी स्तर, सार्वजनिक मंचों तथा न्यायिक प्रक्रियाओं में मतभेद एवं ध्रुवीकरण (Polarisation) बढ़ा है।
इसी कारण इन दिशानिर्देशों को निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तैयार किया गया है—
(क) स्थानीय स्तर पर उत्पन्न होने वाले संघर्षों की रोकथाम एवं उनका प्रभावी समाधान करना।
(ख) मनुष्यों और सामुदायिक कुत्तों के बीच विभिन्न प्रकार के सकारात्मक संबंधों को पुनः विकसित होने का अवसर प्रदान करना।
(ग) बहु-प्रजातीय (Multispecies) सुरक्षित सह-अस्तित्व एवं स्वास्थ्य को बढ़ावा देने हेतु आवश्यक ज्ञान एवं कौशल को सुदृढ़ करना।
अंततः, यह दस्तावेज़ सामुदायिक कुत्तों और सार्वजनिक स्वास्थ्य के बीच मौजूद विभिन्न चुनौतियों तथा उनके समाधान हेतु अपनाई जाने वाली रणनीतियों का एक व्यापक रूपरेखा (Framework) प्रस्तुत करता है।

विषय सूची

भारत में मनुष्य– सामुदायिक कुत्तों के बीच संघर्ष के प्रकार 4
स्थानीय स्तर पर संघर्ष की रोकथाम 4
स्थानीय स्तर पर संघर्ष का शमन 4
सामुदायिक कुत्तों को भोजन कराने से उत्पन्न संघर्षों की रोकथाम: कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत 8
सामुदायिक कुत्तों को भोजन कराने से संबंधित संघर्ष: अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न 10
सामुदायिक कुत्तों को स्मार्ट तरीके से भोजन कराना 13
सामुदायिक कुत्तों के आसपास सुरक्षा 17
समस्या–रणनीति मानचित्र 19

भारत में मनुष्य– सामुदायिक कुत्तों के बीच संघर्ष के प्रकार

भारत में मनुष्यों और सामुदायिक सामुदायिक कुत्तों के बीच होने वाले संघर्ष विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं तथा उनका प्रभाव अलग-अलग स्तरों पर दिखाई देता है।

प्रकार 1: सामुदायिक कुत्तों को लेकर लोगों के बीच होने वाला संघर्ष
(उदाहरण: सामुदायिक कुत्तों को भोजन कराने को लेकर विवाद)
प्रभाव का स्तर: पड़ोस (Neighbourhood), मीडिया, न्यायिक प्रक्रिया (Litigation) एवं नीतिगत स्तर।

प्रकार 2: मनुष्यों द्वारा सामुदायिक कुत्तों के प्रति आक्रामक व्यवहार
(उदाहरण: कुत्तों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना (Relocation), विष देना (Poisoning) अथवा जानबूझकर नुकसान पहुँचाना।)
प्रभाव का स्तर: स्थानीय क्षेत्र / पड़ोस।

प्रकार 3: सामुदायिक कुत्तों के ऐसे व्यवहार जिन्हें लोग आक्रामक मानते हैं
(जैसे—पीछा करना, समूह बनाकर घेर लेना, लोगों पर उछलना या कपड़े एवं सामान पकड़ना।)
प्रभाव का स्तर: स्थानीय क्षेत्र / पड़ोस।

प्रकार 4: सामुदायिक कुत्तों **द्वारा मनुष्यों अथवा पालतू कुत्तों के प्रति आक्रामक व्यवहार**
(जैसे—काटना अथवा आक्रामक तरीके से पीछा करना।)
प्रभाव का स्तर: स्थानीय क्षेत्र / पड़ोस।

प्रकार 5: सामुदायिक कुत्तों **के हमले (Mauling) के कारण गंभीर चोटें या मृत्यु।**
इन सभी प्रकार के संघर्षों के समाधान के लिए अलग-अलग रणनीतियों की आवश्यकता होती है। हालांकि प्रत्येक स्थिति में संघर्ष की रोकथाम (Prevention) ही सबसे प्रभावी एवं सर्वोत्तम उपाय है।

स्थानीय स्तर पर संघर्ष की रोकथाम

स्थानीय स्तर पर संघर्ष की रोकथाम हेतु अपनाई जाने वाली रणनीतियाँ दो प्रमुख श्रेणियों में आती हैं तथा इन्हें उस समय लागू करना सर्वाधिक प्रभावी होता है जब किसी प्रकार का संघर्ष पहले से जारी न हो—
(क) ऐसे स्मार्ट देखभाल (Smart Caregiving) उपाय अपनाना, जिनका उद्देश्य संघर्ष को रोकना अथवा कम करना हो (विशेष रूप से प्रकार 1, 2 एवं 3 के संघर्षों में) ।
(ख) सामुदायिक कुत्तों के आसपास सुरक्षित व्यवहार (Safety Around Street Dogs) के संबंध में समुदाय को जागरूक करना (विशेष रूप से प्रकार 3 एवं 4 के संघर्षों में) ।
(ग) रेबीज़ (Rabies) के विरुद्ध समय-समय पर टीकाकरण सुनिश्चित करना तथा टीकाकरण अभिलेखों (Vaccination Records) का सावधानीपूर्वक संधारण करना, ताकि काटने (Dog Bite) की स्थिति में उनका संदर्भ लिया जा सके।

अधिक जानकारी के लिए स्मार्ट देखभाल (smart caregiving) तथा सामुदायिक सुरक्षा जागरूकता (community safety awareness) से संबंधित अनुभाग देखें।

स्थानीय स्तर पर संघर्ष का शमन

जब किसी क्षेत्र में संघर्ष पहले से चल रहा हो, तब संघर्ष के प्रभाव को कम करने (Conflict Mitigation) हेतु विशेष रणनीतियों की आवश्यकता होती है। यह मार्गदर्शिका मुख्यतः स्थानीय अथवा पड़ोस स्तर पर प्रकार 3 एवं प्रकार 4 के संघर्षों के समाधान पर केंद्रित है।

1. शिकायतकर्ता की बात को गंभीरता से सुनें

यह सुनिश्चित करें कि शिकायतकर्ता स्वयं को सुना एवं समझा हुआ महसूस करे। उसे आश्वस्त करें कि आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। यदि मामला कुत्ते के काटने (Dog Bite) का हो, तो संबंधित कुत्ते की टीकाकरण स्थिति (Vaccination Status) की जानकारी उपलब्ध कराएँ। साथ ही, WHO के Post-Exposure Prophylaxis (PEP) Decision Tree के अनुसार काटने के बाद अपनाए जाने वाले उपचार संबंधी उचित मार्गदर्शन प्रदान करें।

यह प्रक्रिया शिकायतकर्ता की वास्तविक चिंताओं को समझने तथा संबंधित कुत्ते अथवा क्षेत्र के अन्य सामुदायिक कुत्तों के विरुद्ध प्रतिशोधात्मक कार्रवाई (Retaliatory Action) को रोकने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. संघर्ष की प्रकृति एवं उसके मूल कारणों को समझें

प्रकार 3 एवं प्रकार 4 के संघर्ष सामान्यतः निम्नलिखित कारणों से उत्पन्न होते हैं—

किसी विशेष देखभालकर्ता (Caregiver) अथवा स्थान के प्रति अत्यधिक लगाव, जिसके कारण क्षेत्रीय (Territorial) अथवा पालतू-जैसा (Pet-like) सुरक्षात्मक व्यवहार विकसित हो जाता है, जैसे आक्रामक रूप से भौंकना, पीछा करना अथवा काटना।

ऊब (Boredom), खेल भावना (Playfulness) अथवा जिज्ञासा (Curiosity), जिसके कारण पालतू-जैसे व्यवहार दिखाई देते हैं, जैसे बिना आक्रामकता के पीछा करना, समूह बनाकर घेर लेना (Mobbing), लोगों पर उछलना या कपड़ों एवं सामान को पकड़ना।

चिंता (Anxiety) अथवा भय (Fear), जो विशेष रूप से उन कुत्तों में देखा जाता है जिन्हें किसी अन्य स्थान से लाकर बसाया गया हो (Relocated Dogs)।

अपेक्षाकृत कम मामलों में रेबीज़ (Rabies) अथवा स्वभावगत आक्रामकता (Aggressive Personality)।

3. संघर्ष के मूल कारणों का समाधान करें (Address the Drivers of Conflict)

3(क). पालतू-जैसे व्यवहार (Pet-like Behaviours) अथवा स्वभावगत आक्रामकता (Aggressive Personalities) से उत्पन्न संघर्ष

पालतू-जैसे व्यवहार अथवा स्वभावगत आक्रामकता के कारण उत्पन्न संघर्षों का समाधान सामुदायिक कुत्तों में उनके प्राकृतिक व्यवहार एवं आवश्यक कौशलों (Natural Street Dog Skills and Behaviours) के पुनर्विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करके किया जा सकता है। इनमें भोजन की प्राकृतिक खोज (Foraging) तथा लोगों के प्रति आवश्यक सतर्कता बनाए रखना शामिल है।

इसके लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जाने चाहिए—

- किसी विशेष व्यक्ति अथवा स्थान के प्रति कुत्तों की अत्यधिक निर्भरता एवं लगाव को कम करना।
- नियमित रूप से भोजन उपलब्ध कराने पर उसकी निर्भरता को कम करना (हालाँकि यह व्यवस्था बीमार, घायल, अत्यधिक कमजोर, वृद्ध, अनाथ, दुग्धपान कराने वाली, तनावग्रस्त अथवा ऐसे कुत्तों के लिए जारी रहनी चाहिए जिन्हें बंद क्षेत्रों में रखा गया हो और जहाँ भोजन के प्राकृतिक स्रोत उपलब्ध न हों।)
- सामुदायिक कुत्तों को उनके सामान्य व्यवहार एवं कौशलों का पुनः अभ्यास (Re-schooling) कराना। इसके अंतर्गत अहिंसक एवं पूर्णतः हानिरहित प्रतिरोधात्मक उपाय (Non-violent and Harmless Aversive Actions) अपनाए जा सकते हैं, जैसे—
    - स्नेह (Affection) देना अस्थायी रूप से बंद करना।
    - कुत्तों की उपेक्षा करना।

- उससे दूर चले जाना।
- दृढ़ लेकिन शांत स्वर में "**नहीं**" कहना।

इन उपायों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि अवांछित व्यवहार प्रदर्शित करने वाला कुत्ता बिना आमंत्रण के किसी भी व्यक्ति, यहाँ तक कि अपने देखभालकर्ता (Caregiver), के पास न आए।

- कुत्ते को अन्य लोगों के साथ सुरक्षित रूप से घुलने-मिलने के लिए प्रोत्साहित करना। विशेष रूप से उन लोगों (जैसे सफाई कर्मचारी, अन्य स्थानीय निवासी आदि) को इस प्रक्रिया में शामिल करें जिनके प्रति कुत्ता अवांछित व्यवहार प्रदर्शित करता है। यदि वे इच्छुक हों, तो उन्हें कुछ खाद्य पदार्थ (Treats) दिए जा सकते हैं जिन्हें वे प्रारंभ में सुरक्षित दूरी से और बाद में धीरे-धीरे निकट संपर्क स्थापित करते हुए संबंधित कुत्ते को दें। यदि कुत्ता भौंकता है या अन्य अवांछित व्यवहार करता है, तो वे उससे शांत एवं आश्वस्त करने वाले स्वर में बात भी कर सकते हैं।

- स्थानीय पालतू कुत्तों (Owned Dogs) के साथ सामुदायिक कुत्तों का क्रमिक सामाजिककरण (Socialisation) करना। इसके लिए पहले पालतू कुत्ते के मालिक और संबंधित सामुदायिक कुत्तों के बीच विश्वास एवं परिचय विकसित किया जाए। यह नियमित संपर्क एवं खाद्य पुरस्कार (Treats) के माध्यम से किया जा सकता है। जब दोनों के बीच सकारात्मक संबंध स्थापित हो जाएँ, तब धीरे-धीरे सामुदायिक कुत्तों का परिचय पालतू कुत्तों से कराया जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए "Smart feeding (स्मार्ट फीडिंग)" अनुभाग देखें।

3(ख). चिंता (Anxiety) अथवा भय (Fear) के कारण उत्पन्न संघर्ष

यदि संघर्ष का कारण कुत्तों में व्याप्त चिंता या भय हो, तो संबंधित कुत्ते के साथ निकटता से कार्य करते हुए उसे भावनात्मक रूप से स्थिर (Stabilise) करने की आवश्यकता होती है। सामान्यतः इसके लिए कुछ समय तक निम्नलिखित उपाय अपनाए जाते हैं—

(क) नियमित रूप से कुत्तों के संपर्क में रहकर उसे सुरक्षा एवं भरोसे का अनुभव कराना।

(ख) विश्वास स्थापित करने तथा उसे स्थानीय वातावरण के अनुरूप ढलने का अवसर देने के लिए नियमित रूप से भोजन उपलब्ध कराना।

(ग) यदि कुत्ता ऐसे स्थान पर रह रहा हो जहाँ उसका स्वागत नहीं है (जैसे भवन के भीतर), तो उसे वहाँ से हटाकर उपयुक्त एवं सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए अस्थायी बिस्तर (Makeshift Bedding), पानी का पात्र तथा भोजन की व्यवस्था करना। यह स्थान तब तक उसके सुरक्षित आश्रय (Safe Space) के रूप में कार्य कर सकता है जब तक वह पूरी तरह स्थिर न हो जाए।

(घ) उपयुक्त समय आने पर उसका बंध्याकरण (Neutering) तथा टीकाकरण (Vaccination) कराना।

टिप्पणी: जब कुत्ता पूरी तरह स्थिर हो जाए, तब उसे नियमित भोजन एवं देखभालकर्ताओं के अत्यधिक संपर्क से धीरे-धीरे मुक्त (Wean Off) किया जाना चाहिए, ताकि उसमें पालतू-जैसे व्यवहार विकसित न हों।

4. पर्यावरणीय सुधार एवं सामुदायिक सुरक्षा शिक्षा लागू करें (Implement Environmental Modifications and Community Safety Education)

कुछ परिस्थितियों में संघर्ष को कम करने के लिए स्थानीय वातावरण में आवश्यक परिवर्तन (Environmental Modifications) तथा निवासियों, कर्मचारियों एवं राहगीरों के लिए सुरक्षा संबंधी मार्गदर्शन (Safety Guidance) प्रदान करना आवश्यक हो सकता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित उपाय शामिल हैं— स्पीड ब्रेकरों का निर्माण: वाहनों की तेज़ गति को नियंत्रित करने (और परिणामस्वरूप कुत्तों द्वारा पीछा किए जाने की घटनाओं को कम करने) के लिए उचित दूरी पर स्पष्ट रूप से चिह्नित स्पीड ब्रेकरों का निर्माण करना।

भोजन के अत्यधिक स्रोतों को नियंत्रित करना: कुत्तों को आकर्षित करने वाले भोजन के स्रोतों को कम करना। इसमें जानबूझकर कराया जाने वाला भोजन (Intentional Feeding), खुले में पड़ा खाद्य अपशिष्ट तथा विशेष

रूप से सड़क किनारे स्थित भोजनालयों एवं मांस विक्रय स्थलों का कचरा शामिल है। इससे सामुदायिक कुत्तों और लोगों के बीच होने वाले संघर्षों की संभावना कम होती है।
भवनों में प्रवेश रोकने के उपाय: कुत्तों को भवनों में प्रवेश करने से रोकने के लिए सीढ़ियों के निचले हिस्से अथवा अन्य प्रवेश एवं निकास द्वारों पर उपयुक्त गेट लगाना।
जन-जागरूकता संकेतक (Signage) लगाना: ऐसे सूचना-पट्ट लगाना जिनमें यह बताया गया हो कि यदि कोई सड़क कुत्ता पीछा करे तो क्या करना चाहिए, जैसे—
अपनी गति धीमी करें।
यदि कुत्ता पीछा करे, तो रुक जाएँ।
स्थानीय लोगों को लक्षित सुरक्षा मार्गदर्शन देना: स्थानीय निवासियों को, विशेष रूप से व्यक्तिगत (One-to-One) संवाद के माध्यम से, कुत्तों द्वारा पीछा किए जाने तथा कुत्तों के काटने से बचाव संबंधी जानकारी एवं संसाधन उपलब्ध कराना। विस्तृत जानकारी के लिए "section on bite prevention guidance" **अनुभाग देखें।**
बच्चों की निगरानी सुनिश्चित करना: जिन क्षेत्रों में सामुदायिक कुत्ते रहते हैं, वहाँ खेलते समय बच्चों की निकट से निगरानी रखने की सलाह देना तथा आवश्यकता होने पर इसके लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना।

5. रेबीज़ (Rabies) की आशंका होने पर अपनाई जाने वाली कार्यवाही

यदि किसी सामुदायिक कुत्ते में रेबीज़ होने की आशंका हो, तो उसे सुरक्षित रूप से नियंत्रित (Confine) किया जाए तथा निम्नलिखित में से किसी एक उपाय को अपनाया जाए—
यदि उच्च पशु-कल्याण (High Welfare) मानकों के अनुरूप देखभाल संभव हो, तो कुत्ते को 10 दिनों तक निगरानी (Observation) में रखा जाए।
अथवा
परिस्थितियों के अनुसार उसका मानवीय इच्छामृत्यु (Humane Euthanasia) द्वारा प्रबंधन किया जाए।

6. स्वभावगत आक्रामकता (Personality-Driven Aggression) के मामलों में विशेष प्रबंधन

यदि किसी सड़क कुत्ते का आक्रामक व्यवहार केवल उसके स्वभाव (Personality) के कारण हो तथा अन्य सभी उपायों के बावजूद उसमें सुधार न हो, तो संबंधित कुत्ते को लक्षित रूप से उस स्थान से हटाने (Targeted Removal) पर विचार किया जा सकता है।

उदाहरणस्वरूप—

किसी अनुभवी देखभालकर्ता (Experienced Caregiver) द्वारा उसे गोद लेना (Adoption)।

अथवा उसे ऐसे सुव्यवस्थित एवं उच्च पशु-कल्याण मानकों वाले आश्रय-स्थल (Well-managed, High-Welfare Sanctuary) में स्थानांतरित करना।

सामुदायिक कुत्तों को भोजन कराने से उत्पन्न संघर्षों की रोकथाम: कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत

सामुदायिक कुत्तों को भोजन कराने से उत्पन्न संघर्षों की रोकथाम: कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत

1. स्वस्थ सामुदायिक कुत्तों को नियमित रूप से पूरा भोजन (Complete Meals) न कराएँ।

स्वस्थ सामुदायिक कुत्तों को नियमित रूप से पूर्ण भोजन उपलब्ध न कराएँ। उन्हें केवल कभी-कभार (Occasionally) अथवा सीमित मात्रा में भोजन दें। नियमित रूप से पूरा भोजन केवल बीमार, वृद्ध, दुग्धपान कराने वाली (Lactating), अत्यधिक भूखे (Starving) सामुदायिक कुत्ते तथा अनाथ पिल्लों (Orphaned Puppies) के लिए ही आरक्षित होना चाहिए।

क्यों?

ताकि किसी विशेष व्यक्ति अथवा स्थान के प्रति कुत्तों की अत्यधिक निर्भरता एवं लगाव विकसित न हो।

ताकि भोजन की प्राकृतिक खोज (Foraging) तथा विभिन्न प्रकार के लोगों के साथ सह-अस्तित्व बनाए रखने जैसे उनके आवश्यक सड़क-जीवन कौशल सुरक्षित रहें। भोजन की प्राकृतिक खोज कुत्तों के शारीरिक एवं मानसिक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है।

2. कुत्तों की भीड़, पीछा करने की प्रवृत्ति एवं पालतू-जैसी आक्रामकता को रोकें।

- भोजन कराने के स्थान अलग-अलग रखें।
- प्रतिदिन एक ही स्थान पर भोजन न कराएँ।
- जिस स्थान पर कुत्ते विश्राम या आश्रय लेते हैं, उसी स्थान पर उन्हें भोजन न दें और न ही अत्यधिक स्नेह प्रदर्शित करें।

क्यों?

ताकि भोजन, आश्रय एवं मानवीय स्नेह किसी एक स्थान पर अत्यधिक केंद्रित न हो, जिससे कुत्तों में क्षेत्रीय (Territorial) अथवा स्वामित्व की भावना विकसित न हो।

3. यदि कुत्ते एकत्र होने लगें या पीछा करने अथवा भौंकने जैसे अवांछित व्यवहार प्रदर्शित करें, तो कुछ समय के लिए भोजन कराना बंद कर दें।

यदि कोई कुत्ता लोगों या वाहनों का पीछा करने, उन पर भौंकने अथवा काटने (Nipping) का प्रयास करने लगे, तो उसे पूरी तरह अनदेखा करें तथा अस्थायी रूप से भोजन देना बंद कर दें।

क्यों?

इससे अवांछित व्यवहार को हतोत्साहित किया जा सकता है। साथ ही, भोजन कराने की पद्धति में आवश्यक परिवर्तन अवश्य करें ताकि ऐसा व्यवहार पुनः उत्पन्न न हो।

4. निर्भरता को धीरे-धीरे कम करें।

यदि सामुदायिक कुत्ते नियमित भोजन पर निर्भर हो चुके हों, तो भोजन की मात्रा एवं आवृत्ति (Frequency) को धीरे-धीरे कम करें। इस दौरान उनकी भोजन खोजने (Foraging) की क्षमता एवं स्वास्थ्य की नियमित निगरानी करें।

क्यों?

ताकि वे पुनः विभिन्न स्थानों एवं विभिन्न लोगों के माध्यम से भोजन, आश्रय एवं सहयोग प्राप्त करने में सक्षम हो सकें।

5. सामुदायिक कुत्तों के साथ पालतू कुत्तों जैसा व्यवहार न करें।

क्यों?

सामुदायिक कुत्तों के साथ अत्यधिक पालतू-जैसा व्यवहार करने से उनमें ऐसे व्यवहार विकसित हो सकते हैं जो आगे चलकर संघर्ष का कारण बनते हैं। इसके परिणामस्वरूप उन्हें प्रतिशोधात्मक हिंसा (Retaliatory Violence) का सामना करना पड़ सकता है।
सामुदायिक कुत्ते कुछ लोगों के प्रति अत्यंत स्नेही एवं मित्रवत हो सकते हैं, जबकि जिन लोगों को वे अपरिचित समझते हैं अथवा जो उनसे असहज या भयभीत रहते हैं, उनके प्रति आक्रामक व्यवहार भी प्रदर्शित कर सकते हैं।

6. समुदाय के साथ समन्वय बनाए रखें।
संघर्ष की स्थिति में समुदाय की चिंताओं को गंभीरता से लें तथा सभी संबंधित पक्षों के सहयोग से समाधान निकालने का प्रयास करें।

7. केवल वर्तमान कानूनों पर निर्भर न रहें।
सामुदायिक कुत्तों के संरक्षण तथा उन्हें भोजन कराने से संबंधित वर्तमान कानूनी प्रावधान भविष्य में चुनौती दिए जा सकते हैं।
इसलिए, समुदाय में विश्वास, सहयोग एवं सद्भाव बनाए रखना ही सामुदायिक कुत्तों की सुरक्षा तथा उनकी सामाजिक स्वीकृति सुनिश्चित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।

सामुदायिक कुत्तों को भोजन कराने से संबंधित संघर्ष: अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

प्रश्न 1. कुछ मित्रवत (Friendly) सड़क कुत्तों केवल कुछ लोगों का ही पीछा क्यों करते हैं, उन पर भौंकते हैं या आक्रामक व्यवहार क्यों प्रदर्शित करते हैं?

स्वस्थ सामुदायिक कुत्तों को प्रतिदिन नियमित रूप से पूर्ण भोजन (Complete Meals) उपलब्ध कराए जाने के कारण किसी विशेष स्थान तथा विशेष व्यक्तियों (विशेष रूप से भोजन कराने वालों एवं देखभालकर्ताओं) के प्रति उनका अत्यधिक लगाव विकसित हो जाता है।

इसके परिणामस्वरूप वे उन लोगों के प्रति, जिन्हें वे अपरिचित (Strangers) मानते हैं अथवा जो कुत्तों के प्रति असहज या भयभीत रहते हैं, पालतू-जैसा आक्रामक व्यवहार (Pet-like Aggression) प्रदर्शित करने लगते हैं, जैसे—

1. पीछा करना (Chasing)
2. लगातार भौंकना (Barking)
3. समूह बनाकर घेर लेना (Crowding)
4. हल्का काटने या कपड़े पकड़ने का प्रयास करना (Nipping)

कई बार यह व्यवहार नियमित रूप से भोजन मिलने के कारण भोजन खोजने (Foraging) की आवश्यकता कम हो जाने, अधिक खाली समय (Leisure) तथा ऊब (Boredom) के कारण भी विकसित हो सकता है।

अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध भोजन अन्य क्षेत्रों के कुत्तों को भी आकर्षित करता है, जिसके कारण भोजन कराने वाले स्थानों पर अनेक कुत्ते एकत्र (Congregate) होने लगते हैं।

प्रश्न 2. इस प्रकार के संघर्षपूर्ण व्यवहार सामुदायिक कुत्तों के लिए क्यों खतरनाक हैं?

ऐसे व्यवहारों के कारण लोगों द्वारा प्रतिशोधात्मक (Retaliatory) कार्रवाई किए जाने की संभावना बढ़ जाती है, जैसे—

1. पत्थर मारना।
2. डंडों या अन्य वस्तुओं से हमला करना।
3. कुत्तों को पकड़कर अन्य स्थानों पर छोड़ देना (Relocation)।
4. विष देना (Poisoning)।

जनवरी 2022 से जून 2024 के बीच भारत के सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court) तथा विभिन्न उच्च न्यायालयों (High Courts) में मनुष्य– सामुदायिक कुत्तों संघर्ष से संबंधित दायर मामलों में 25 प्रतिशत से अधिक मामले सामुदायिक कुत्तों को भोजन कराने (Feeding) से जुड़े हुए थे। इनमें से कोई भी मामला भविष्य में ऐसे विधायी (Legislative) परिवर्तन का कारण बन सकता है, जिससे वर्तमान में सामुदायिक कुत्तों को प्राप्त कानूनी संरक्षण समाप्त हो सकता है। वर्ष 2001 से पहले स्थानीय निकाय (जैसे नगर निगम) सामुदायिक कुत्तों को मार दिया करते थे। Animal Birth Control (ABC) Rules लागू होने के बाद इस प्रथा पर रोक लगी। किंतु इन नियमों में संसद द्वारा संशोधन किया जा सकता है अथवा न्यायालयों के निर्णयों के माध्यम से इन्हें निरस्त (Repeal) भी किया जा सकता है।

प्रश्न 3. यदि सामुदायिक कुत्तों को नियमित रूप से भोजन न कराया जाए, तो उन्हें भोजन कहाँ से मिलेगा?

सड़क कुत्ते स्वभावतः भोजन खोजने वाले (Foragers) होते हैं।
उनका भोजन केवल कचरे से ही प्राप्त नहीं होता, बल्कि वे समाज के विभिन्न स्रोतों से भी भोजन प्राप्त करते हैं, जैसे—

1. चाय की दुकानें।

2. सड़क किनारे स्थित भोजनालय।
3. मांस विक्रय स्थल।
4. सफाई कर्मचारी।
5. ऑटो चालक।
6. घरों से निकाला गया बचा हुआ भोजन।

आज भी भारत के अधिकांश सामुदायिक कुत्ते इसी प्रकार भोजन खोजकर अपना जीवनयापन करते हैं। भोजन की प्राकृतिक खोज (Foraging) सामुदायिक कुत्तेका एक अत्यंत महत्वपूर्ण जीवन कौशल है तथा यह उनके लिए सकारात्मक एवं स्वाभाविक जीवन अनुभव भी प्रदान करती है।

प्रश्न 4. क्या इसका अर्थ यह है कि हमें सामुदायिक कुत्तों को बिल्कुल भी भोजन नहीं कराना चाहिए?

नहीं।

इसका अर्थ केवल इतना है कि सामुदायिक कुत्तों को जिम्मेदारीपूर्वक एवं "स्मार्ट फीडिंग (Smart Feeding)" के सिद्धांतों के अनुसार भोजन कराया जाना चाहिए।
स्वस्थ सामुदायिक कुत्तेको नियमित रूप से अथवा पूरा भोजन न कराएँ।
यदि आवश्यक हो तो उन्हें केवल कभी-कभार (Occasionally) अथवा सीमित मात्रा में भोजन देकर उनके साथ विश्वास (Trust) स्थापित किया जा सकता है।
नियमित एवं पूर्ण भोजन केवल अत्यधिक भूखे, बीमार, दुग्धपान कराने वाले कुत्तों तथा अनाथ पिल्लों के लिए ही होना चाहिए।
जब ऐसे कुत्ते स्वस्थ हो जाएँ अथवा स्वतंत्र रूप से जीवनयापन करने में सक्षम हो जाएँ, तब उन्हें भी धीरे-धीरे नियमित भोजन पर निर्भरता से मुक्त (Wean Off) किया जाना चाहिए।
इसके अतिरिक्त—
यदि भोजन कराने वाले स्थान पर अनेक कुत्ते स्थायी अथवा अस्थायी रूप से एकत्र होने लगें, तो उस स्थान पर कुछ समय के लिए भोजन कराना बंद कर दें।
यदि कुत्ते पीछा करना, भौंकना अथवा अन्य प्रकार का संघर्षपूर्ण व्यवहार प्रदर्शित करने लगें, तो तत्काल भोजन कराना रोक दें तथा कुछ समय के लिए उन्हें स्नेह एवं अतिरिक्त ध्यान देना भी बंद कर दें।

प्रश्न 5. लोग तो हमेशा से सामुदायिक कुत्तों को भोजन कराते आए हैं। फिर अब भोजन कराना संघर्ष का प्रमुख कारण क्यों बन गया है?

कुछ समय पहले तक बहुत कम लोग सामुदायिक कुत्तों को नियमित रूप से भोजन कराते थे। किंतु पिछले लगभग 10 वर्षों में, विशेष रूप से कोविड-19 लॉकडाउन के बाद, बड़ी संख्या में लोग अनेक स्वस्थ सामुदायिक कुत्तों को प्रतिदिन पूर्ण भोजन (Complete Meals) कराने लगे हैं।

अनेक मामलों में यह भोजन कुछ निश्चित मोहल्लों या स्थानों पर नियमित रूप से कराया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उन क्षेत्रों में भोजन की अत्यधिक उपलब्धता (Excess Availability of Food) हो जाती है। जो लोग नियमित रूप से भोजन कराते हैं, वे सामान्यतः कुत्तों के प्रति अत्यधिक स्नेह रखते हैं। परिणामस्वरूप भोजन प्राप्त करने वाले कुत्तों को अन्य सामुदायिक कुत्तों की तुलना में अधिक ध्यान, स्नेह एवं संरक्षण मिलता है। इससे उनमें निम्नलिखित व्यवहार विकसित होने लगते हैं—

1. भोजन कराने वाले व्यक्तियों के प्रति स्वामित्व (Possessiveness) की भावना।
2. भोजन कराने वाले स्थानों के प्रति क्षेत्रीय (Territorial) व्यवहार।
3. अन्य लोगों (विशेषकर जो उन्हें भोजन नहीं कराते) के प्रति आक्रामकता।

इसके अतिरिक्त, जब किसी स्थान पर अत्यधिक मात्रा में भोजन उपलब्ध होने लगता है, तो अन्य क्षेत्रों के सामुदायिक कुत्ते भी वहाँ आने लगते हैं और समूह बनाकर रहने लगते हैं। पर्याप्त भोजन उपलब्ध होने के कारण वहाँ पहले से रहने वाले कुत्ते भी नए कुत्तों के प्रति अपना क्षेत्रीय व्यवहार (Territorial Behaviour) कम कर देते हैं।

सामुदायिक कुत्तों को स्मार्ट तरीके से भोजन कराना

सामुदायिक कुत्तों को भोजन कराना करुणा (Compassion) का प्रतीक है। किन्तु नियमित रूप से भोजन कराना अनजाने में उनके लिए कई समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है।

यह उन्हें भोजन के लिए दूसरों पर निर्भर बना सकता है तथा उनकी प्राकृतिक भोजन-खोज (Natural Foraging) की क्षमता को कम कर सकता है। इसके अतिरिक्त, यह विभिन्न प्रकार के लोगों—विशेष रूप से उन लोगों जो कुत्तों को पसंद नहीं करते—के साथ सुरक्षित एवं संतुलित व्यवहार करने की उनकी क्षमता को भी प्रभावित करता है।

नियमित भोजन के कारण उनमें किसी विशेष व्यक्ति अथवा स्थान के प्रति लगाव (Attachment) एवं क्षेत्रीय (Territorial) व्यवहार विकसित हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप वे भौंकने, पीछा करने अथवा अन्य संघर्षपूर्ण व्यवहार प्रदर्शित करने लगते हैं।

ऐसी परिस्थितियाँ लोगों और सामुदायिक कुत्तों के बीच संघर्ष को बढ़ाती हैं तथा अंततः सामुदायिक कुत्ते की सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न करती हैं।

इसलिए भोजन कराने की रणनीति में उचित परिवर्तन (Strategic / Modified Feeding Practices) अपनाकर सामुदायिक कुत्तों के कल्याण को सुनिश्चित किया जा सकता है तथा मनुष्यों और सामुदायिक कुत्तों के बीच सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व (Harmony) को बढ़ावा दिया जा सकता है।

नियमित भोजन कराने के लाभ (Pros of Regular Feeding)	**नियमित भोजन कराने के नुकसान (Cons of Regular Feeding)**
• सामुदायिक कुत्तों के लिए भोजन का एक अतिरिक्त स्रोत उपलब्ध होता है। • सामुदायिक कुत्तों और मनुष्यों के बीच सामाजिक संबंध (Socialised Relations) विकसित होते हैं। • भोजन कराने वाले व्यक्तियों को संतोष एवं आत्मसंतुष्टि (Sense of Fulfilment) का अनुभव होता है।	• सड़क कुत्तों भोजन के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं तथा उनकी प्राकृतिक भोजन खोजने (Foraging) की क्षमता कम हो जाती है। • उनके सड़क-जीवन के आवश्यक कौशल (Street Skills) कमजोर हो जाते हैं तथा वे विभिन्न प्रकार के लोगों के साथ सुरक्षित व्यवहार करने में असमर्थ हो जाते हैं, जिससे मनुष्य–सड़क कुत्ता संघर्ष बढ़ता है। • उनमें क्षेत्रीय (Territorial) एवं अत्यधिक लगाव (Attachment) की भावना विकसित होती है, जिसके कारण वे भौंकने एवं लोगों का पीछा करने लगते हैं। • एक ही स्थान पर अनेक कुत्तों का जमावड़ा (Congregation) बढ़ जाता है, जिससे कुत्तों के बीच लड़ाई तथा समुदाय की शिकायतें बढ़ती हैं। • सामुदायिक कुत्तों को नापसंद करने वाले लोगों में उनके प्रति शत्रुता (Hostility) बढ़ सकती है, जिससे उन्हें नुकसान पहुँचाने, अन्य स्थानों पर छोड़ आने (Relocation) अथवा मार दिए जाने तक का खतरा उत्पन्न हो सकता है।

	• इस प्रकार की परिस्थितियों के कारण Animal Birth Control (ABC) Rules को समाप्त (Repeal) करने, सामुदायिक कुत्तों को हटाने अथवा सार्वजनिक स्थानों पर उन्हें भोजन कराने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग करते हुए अनेक न्यायालयीन मामले दायर किए जा चुके हैं।

Smart Feeding (स्मार्ट फीडिंग) का उद्देश्य सामुदायिक कुत्तों को भोजन कराने के सकारात्मक लाभ—जैसे आवश्यकता वाले कुत्तों को सहायता उपलब्ध कराना तथा मनुष्यों और कुत्तों के बीच सकारात्मक संबंध विकसित करना—को बनाए रखना है।

साथ ही, इसका उद्देश्य भोजन पर अत्यधिक निर्भरता, संघर्ष तथा संभावित नुकसान के जोखिम को न्यूनतम करना भी है। यदि भोजन कराने वाले व्यक्ति इन स्मार्ट सिद्धांतों को अपनाएँ, तो वे सामुदायिक कुत्तों के कल्याण के साथ-साथ समुदाय के साथ उनके शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को भी प्रोत्साहित कर सकते हैं।

कब खिलाएँ

1. केवल उन कुत्तों को भोजन दें जो बीमार, वृद्ध, दूध पिला रही (स्तनपान कराने वाली) मादा हों, या भूखे अथवा अनाथ पिल्ले हों।

स्वस्थ समुदायिक कुत्ते आमतौर पर भोजन की तलाश (forgingr) करके अपना पर्याप्त भोजन स्वयं प्राप्त कर लेते हैं और उन्हें अतिरिक्त भोजन देने की आवश्यकता नहीं होती।

2. नियमित या पूरा भोजन देने से पूरी तरह बचें।

सड़क के कुत्तों को नियमित रूप से या पूरा भोजन न दें। भोजन केवल आवश्यकता होने पर ही दिया जाना चाहिए। भोजन कभी-कभार और सीमित मात्रा में ही दें, ताकि कुत्ते उस पर निर्भर न हो जाएँ। नियमित रूप से भोजन देने से उनकी प्राकृतिक रूप से भोजन खोजने (forging) की क्षमता कम हो सकती है। इससे वे कुछ चुनिंदा लोगों पर निर्भर हो जाते हैं और अन्य लोगों के साथ सुरक्षित ढंग से व्यवहार करने की उनकी क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप भौंकना, लोगों का पीछा करना और अपने क्षेत्र की रक्षा के लिए आक्रामक व्यवहार जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। यदि भोजन अनियमित अंतराल पर और कम मात्रा में दिया जाए, तो कुत्ते आत्मनिर्भर बने रहते हैं और अपने परिवेश के साथ बेहतर ढंग से सामंजस्य स्थापित कर पाते हैं।

3. कुत्तों की भीड़ एकत्र होने से रोकें

भोजन अलग-अलग स्थानों पर दें, ताकि एक ही जगह पर कई कुत्ते इकट्ठा न हों। एक स्थान पर भीड़ लगने से कुत्तों के बीच लड़ाई-झगड़े हो सकते हैं और स्थानीय समुदाय की शिकायतें बढ़ सकती हैं। यदि किसी स्थान पर कुत्ते बड़ी संख्या में इकट्ठा होने लगें, तो उनके पूरी तरह बिखर जाने तक वहाँ भोजन देना बंद कर दें।

4. बिना ध्यान आकर्षित किए भोजन दें: शांत समय और उपयुक्त स्थान चुनें

भोजन ऐसे समय दें जब आसपास कम आवाजाही हो और ऐसे स्थान चुनें जो बहुत अधिक दिखाई न देते हों। इससे लोगों को कम असुविधा होगी और उन लोगों का ध्यान भी कम आकर्षित होगा जो सड़क के कुत्तों की उपस्थिति से असहज महसूस करते हैं।

5. भोजन देने के बाद कोई निशान न छोड़ें

बचा हुआ भोजन, बर्तन या अन्य कचरा पूरी तरह साफ कर दें, ताकि समुदाय में नकारात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न न हो।

6. धीरे-धीरे निर्भरता कम करें

यदि कुत्ते पहले से नियमित भोजन के आदी हो चुके हैं, तो समय के साथ भोजन की मात्रा और आवृत्ति धीरे-धीरे कम करें। साथ ही यह भी देखते रहें कि वे स्वयं भोजन खोजने में सक्षम हैं या नहीं।

7. सड़क के कुत्तों को पालतू जानवरों की तरह न रखें

उनसे उचित दूरी बनाए रखें, ताकि वे भोजन देने वाले व्यक्तियों से अत्यधिक जुड़ाव विकसित न करें। ऐसा जुड़ाव क्षेत्रीयता और संघर्षपूर्ण व्यवहार को बढ़ावा दे सकता है। सड़क के कुत्तों के लिए यह आवश्यक है कि वे मानव समाज के साथ अपने स्तर पर संतुलित ढंग से रहना सीखें।

8. विवाद की स्थिति में भोजन देने की पद्धति बदलें

यदि भोजन देने से कुत्तों की भीड़ लगने लगे या आक्रामक व्यवहार बढ़े, तो भोजन देने का तरीका बदलें या कुछ समय के लिए भोजन देना रोक दें। जो कुत्ते भौंकते हैं, लोगों का पीछा करते हैं, उनके पीछे-पीछे चलते हैं या समूह बनाकर उन्हें घेर लेते हैं, उन्हें पूरी तरह नज़रअंदाज़ करें। इससे उनके लगाव या प्रभुत्व स्थापित करने वाले व्यवहार को बढ़ावा नहीं मिलेगा।

9. समुदाय की चिंताओं को गंभीरता से लें

स्थानीय लोगों की शिकायतों को गंभीरता से सुनें और टकराव से बचते हुए मध्यस्थों तथा समुदाय के अन्य लोगों के साथ मिलकर समाधान खोजें।

10. कुत्तों का नियमित टीकाकरण सुनिश्चित करें

जिन कुत्तों को आप भोजन देते हैं, उनका नियमित टीकाकरण कराएँ, विशेष रूप से रेबीज़ का टीका अवश्य लगवाएँ। इससे कुत्तों के स्वास्थ्य के साथ-साथ सार्वजनिक सुरक्षा भी सुनिश्चित होती है।

11. पीने के लिए स्वच्छ पानी उपलब्ध कराएँ

सड़क के कुत्तों के लिए भोजन की तुलना में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होना अधिक कठिन होता है। इसलिए भोजन के साथ ताज़ा और साफ़ पीने का पानी उपलब्ध कराना आवश्यक है, विशेषकर जब उन्हें सूखा भोजन (जैसे किबल) दिया जा रहा हो। पानी के बर्तनों को साफ रखें और उन्हें नियमित रूप से भरते रहें। साथ ही, मच्छरों के पनपने जैसी संभावित चिंताओं को पहले से दूर करने के लिए स्थानीय निकायों और निवासी कल्याण संघों (Resident Welfare Associations) के साथ समन्वय बनाए रखें।

12. केवल वर्तमान कानूनों पर निर्भर न रहें

सामुदायिक कुत्तों की सुरक्षा और उन्हें भोजन देने के अधिकार से संबंधित कानूनी प्रावधान समय-समय पर चुनौती का सामना कर सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि भोजन देने की ऐसी जिम्मेदार और विवाद-मुक्त पद्धति अपनाई

जाए, जिससे समुदाय में सद्भाव बना रहे और सामुदायिक कुत्तों की सुरक्षा तथा उनकी सामाजिक स्वीकृति सुनिश्चित हो।

सामुदायिक कुत्तों के आसपास सुरक्षा

सामुदायिक कुत्तों को भौंकने या पीछा करने से कैसे रोकें

- शांत रहें और अपनी जगह पर स्थिर खड़े रहें।
- धीरे-धीरे वहाँ से हटें। यदि संभव हो, तो कुत्ते/कुत्तों से शांत और आश्वस्त करने वाले स्वर में बात करते हुए आगे बढ़ें।
- वाहन चलाते समय सामुदायिक कुत्तों के पास पहुँचने पर गति धीमी कर दें।
- आवश्यकता पड़ने पर वाहन रोक दें। सामान्यतः कुत्ते कुछ ही देर में शांत होकर स्वयं हट जाते हैं।

जिन सामुदायिक कुत्तों से आपका नियमित सामना होता है या जो आपके पड़ोस में रहते हैं

- उनसे मित्रवत और शांत स्वर में बात करें। इससे उन्हें भरोसा मिलता है कि आप उनके लिए खतरा नहीं हैं।
- उन्हें अपने, अपने वाहन या अपने पालतू पशु से धीरे-धीरे परिचित होने दें। उदाहरण के लिए, कभी-कभी उनसे बात करें, अवसर मिलने पर थोड़ी-सी ट्रीट दें या यदि वे सहज हों तो उन्हें हल्के से सहला सकते हैं।

यदि कोई सामुदायिक कुत्ता आपका पीछा करे या बहुत पास आने लगे

- दृढ़ लेकिन शांत स्वर में बार-बार "नहीं" कहें।
- एक लंबी छड़ी उनकी ओर संकेत करते हुए पकड़ें या उसे ज़मीन पर हल्के से थपथपाएँ। उन्हें मारने की आवश्यकता नहीं है।
- उन्हें डराकर दूर भगाने के लिए पत्थर उठाने या फेंकने का केवल अभिनय करें।

इन परिस्थितियों में शांत बने रहना अत्यंत महत्वपूर्ण है। कुत्ते लोगों की घबराहट या उत्तेजना तथा तेज़ी से चलती वस्तुओं से अधिक उत्तेजित हो जाते हैं। वहीं, किसी क्षेत्र के निवासी सामुदायिक कुत्ते आश्वस्त होने पर सामान्यतः ऐसे डराने वाले व्यवहार जल्दी बंद कर देते हैं। यदि इन उपायों का नियमित और लगातार पालन किया जाए, तो कुछ दिनों में स्थानीय सामुदायिक कुत्ते आपके प्रति अवांछित व्यवहार करना छोड़ सकते हैं।

स्थानीय सामुदायिक कुत्ते ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं?

इसके कुछ सामान्य कारण हैं—

1. वे (गलतफ़हमी में) यह मान लेते हैं कि सभी लोग सामुदायिक कुत्तों को पसंद करते हैं (जैसे पीछे-पीछे चलना या उछलना)।
2. वे किसी व्यक्ति के प्रति केवल जिज्ञासु होते हैं (जैसे सूँघना या बिना भौंके अथवा गुर्राए पास आना)।
3. वे कुछ लोगों को अपने क्षेत्र के लिए अपरिचित मानते हैं (जैसे भौंकना, गुर्राना या पीछा करना)।
4. वे तेज़ आवाज़ करने वाली वस्तुओं, जैसे ऊँची आवाज़ वाले वाहन इंजन, को खतरा समझते हैं।
5. वे खेल रहे होते हैं या तेज़ी से चलती वस्तुओं का पीछा करने की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार व्यवहार कर रहे होते हैं।

सुरक्षित पड़ोस के लिए

- पड़ोसियों तथा उन लोगों से अनुरोध करें जो स्थानीय सामुदायिक कुत्तों को जानते हैं कि वे उनका बधियाकरण (नसबंदी) और नियमित टीकाकरण कराएँ तथा जिम्मेदार और विवेकपूर्ण देखभाल एवं भोजन देने की पद्धति अपनाएँ।
- सड़कों पर पर्याप्त निकटता पर स्पष्ट रूप से चिह्नित स्पीड ब्रेकर लगवाएँ, ताकि वाहन चालक गति न बढ़ा सकें। "धीमी गति से चलें" या "अधिक गति निषिद्ध" जैसे संकेतक भी लगवाएँ।
- भवनों में कुत्तों के प्रवेश को रोकने के लिए प्रवेश/निकास द्वारों अथवा सीढ़ियों के पास फाटक या गेट लगवाएँ।
- सार्वजनिक स्थानों पर बच्चों के खेलने के समय उनकी उचित निगरानी सुनिश्चित करें।
- स्थानीय सामुदायिक कुत्तों को उनके क्षेत्र से हटाएँ या अन्यत्र स्थानांतरित न करें। ऐसा करने से नए कुत्ते उस क्षेत्र में आ जाते हैं और संघर्ष का चक्र फिर शुरू हो जाता है। इसके बजाय नसबंदी किए गए, टीकाकृत और सामाजिक रूप से अभ्यस्त सामुदायिक कुत्तों की स्थिर आबादी बनाए रखें।
- सामुदायिक कुत्तों के व्यवहार और उनके आसपास सुरक्षित रहने के तरीकों को समझें तथा बच्चों को भी इसके बारे में शिक्षित करें।

जिन कुत्तों को नियमित रूप से पूरा भोजन दिया जाता है, वे भोजन खोजने और विभिन्न प्रकार के लोगों के साथ सुरक्षित ढंग से व्यवहार करने के लिए आवश्यक जीवन-कौशल धीरे-धीरे खो देते हैं।

पालतू कुत्तों और सामुदायिक कुत्तों में अंतर

पालतू कुत्ते जीवन भर अपने मालिकों के पूर्ण नियंत्रण, संरक्षण और देखभाल में रहते हैं। इसलिए वे व्यवहारिक रूप से जीवन भर आश्रित बने रहते हैं। इसके विपरीत, सामुदायिक कुत्तों को पिल्लेपन के बाद स्वतंत्र जीवन जीना सीखना पड़ता है। उन्हें स्वयं विभिन्न प्रकार के लोगों और मानव समाज के साथ तालमेल बिठाना होता है। उन्हें भोजन देने वाले लोग हर समय उनकी रक्षा नहीं कर सकते — चाहे वह उन्हें कहीं और ले जाए जाने का खतरा हो, विष दिए जाने का खतरा हो या कानूनों में परिवर्तन का।

यह मान लेना भी सही नहीं है कि पालतू कुत्तों का जीवन हमेशा सामुदायिक कुत्तों से बेहतर होता है। अच्छे से अच्छे मालिक होने पर भी पालतू कुत्तों के पास कई बुनियादी स्वतंत्रताएँ नहीं होतीं — जैसे अपनी इच्छा से शौच या मूत्र त्याग करना, जब चाहें साथ ढूँढ़ना या अकेले रहना, अपने साथी और मित्र चुनना, अपनी इच्छा से बाहर जाना या विश्राम करना। इसके अतिरिक्त, उन्हें भी परित्याग और दुर्व्यवहार का जोखिम रहता है।

इसी प्रकार, यह भी आवश्यक नहीं कि सामुदायिक कुत्तों का जीवन पालतू कुत्तों से अधिक कठिन हो। उनके पास अनेक ऐसी स्वतंत्रताएँ होती हैं जो पालतू कुत्तों को उपलब्ध नहीं होतीं। उनकी स्वतंत्रता उन्हें अधिक समृद्ध जीवन-अनुभव प्रदान करती है। उदाहरण के लिए, भोजन की खोज (foraging) स्वयं उनके लिए एक सकारात्मक और स्वाभाविक गतिविधि हो सकती है।

मनुष्यों की तरह पशुओं को भी संतोषपूर्ण जीवन के लिए विविध प्रकार के अनुभवों की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि चिड़ियाघरों में रहने वाले पशु, भोजन और आश्रय उपलब्ध होने के बावजूद, अक्सर गहरे तनाव और कष्ट का अनुभव करते हैं।

समस्या–रणनीति मानचित्र

वर्तमान में सामुदायिक कुत्तों से जुड़ी प्रमुख सार्वजनिक चिंताएँ हैं — रेबीज़ के अतिरिक्त, काटना, लोगों का पीछा करना तथा एक स्थान पर बड़ी संख्या में कुत्तों का इकट्ठा होना। इन प्रत्येक समस्याओं के समाधान के लिए अलग-अलग रणनीतियों की आवश्यकता होती है।

रेबीज़ की रोकथाम के लिए

स्वास्थ्य व्यवस्था एवं अवसंरचना	**जनता एवं स्वास्थ्यकर्मियों के लिए जागरूकता**	**कुत्तों एवं अन्य पशुओं पर केंद्रित उपाय**
ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे शहरों में उपयुक्त पोस्ट-एक्सपोज़र प्रोफिलैक्सिस (PEP) की उपलब्धता और पहुँच सुनिश्चित करना।	विभिन्न प्रकार के घावों के अनुसार सही उपचार-प्रोटोकॉल का पालन।	कुत्तों का नियमित सामूहिक रेबीज़ टीकाकरण।
शीत-श्रृंखला (कोल्ड चेन) का उचित रखरखाव।	PEP का पूरा निर्धारित कार्यक्रम समय पर पूरा करना।	जहाँ आवश्यक हो, वन्यजीवों का भी सामूहिक टीकाकरण।
	घाव को तुरंत और अच्छी तरह धोने के महत्व के बारे में जागरूकता।	

काटने, पीछा करने और कुत्तों की भीड़ एकत्र होने की रोकथाम के लिए

सामुदायिक कुत्तों की देखभाल करने वालों एवं पशु-कल्याण समूहों के लिए	**सामान्य नागरिकों के लिए**	**रेज़िडेंट वेलफेयर एसोसिएशनों एवं स्थानीय पशु-कल्याण समूहों के लिए**
पयुक्त संक्रमण अवधि (weaning) के बाद सामुदायिक कुत्तों को नियमित रूप से पूरा भोजन देना बंद करें।	वयस्कों और बच्चों को सामुदायिक कुत्तों के आसपास सुरक्षित व्यवहार के बारे में व्यापक रूप से शिक्षित करें।	ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिससे कुत्तों की भीड़ न लगे, निजी परिसरों में उनका प्रवेश सीमित हो तथा पीछा करने जैसी संघर्ष की स्थितियाँ कम हों।
एक ही स्थान और एक ही समय पर भोजन देने से बचें।		प्रत्येक मोहल्ले की परिस्थितियों के अनुरूप विवादों की रोकथाम, तनाव कम करने और समाधान की सक्रिय व्यवस्था विकसित करें।
इसके बजाय कम मात्रा में, अलग-अलग स्थानों और अलग-अलग समय पर कभी-कभार भोजन देने की पद्धति अपनाएँ। इससे कुत्तों की भीड़ नहीं लगती, पीछा करने जैसी समस्याएँ कम होती हैं और कुत्ते भोजन खोजने तथा लोगों के साथ सुरक्षित व्यवहार करने के अपने		

आवश्यक जीवन-कौशल बनाए रखते या पुनः सीखते हैं।		
प्रत्येक मोहल्ले की परिस्थितियों के अनुरूप विवादों की रोकथाम, तनाव कम करने और समाधान की सक्रिय व्यवस्था विकसित करें।		

इस दस्तावेज़ का संदर्भ इस प्रकार दें:

Srinivasan, K., Mehrotra, V., Rubio-Ramon, G. 2025. Street Dogs and Multispecies Health in India: Guidelines for Conflict Prevention and Safe Cohabitation. ROH-Indies Research Project. https://rohindies.org/guidelines/

ROH-Indies प्रोजेक्ट के बारे में

ROH Indies प्रोजेक्ट शहरी और ग्रामीण भारत में लोगों और सामुदायिक कुत्तों के बीच आपसी सह-अस्तित्व, कुत्तों के व्यवहार और रेबीज़ के रोकथाम का अध्ययन करने के लिए मानव भूगोल, इतिहास, व्यवहार विज्ञान और सामाजिक मनोविज्ञान को एक साथ लाता है। इसका मकसद स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए नए विचार, रणनीतियाँ और तौर-तरीके विकसित करना है। इस प्रोजेक्ट को **वेलकम ट्रस्ट** से फ़ंडिंग मिलती है।

हमारे कार्य, टीम और रिसर्च के बारे में ज़्यादा जानकारी के लिए:

rohindies.org

THE UNIVERSITY of EDINBURGH · UTS:CfCC CENTRE FOR COMPASSIONATE CONSERVATION · UNIVERSITY OF LIVERPOOL · THE UNIVERSITY OF WESTERN AUSTRALIA · wellcome